हक़ीक़ते दीन

क़िस्त –7

मुफ़क्किरे इस्लाम डॉ0 मौलाना सै0 कल्बे सादिक़ साहब क़िब्ला

"दीन और दुनिया में जंग नहीं"

इतनी तक़रीरें होती हैं, इतनी किताबें लिखी जाती हैं मगर लोग मज़हब से दूर होते जा रहे हैं। बात यह है कि इसमें किसी और की ग़लती नहीं है बल्कि ग़लती हमारे (उलमा) की है। चन्द ग़लतियां हैं हमारी। पहली ग़लती यह है कि नज़रियात (Ideology)के सिलसिले में, अकीदे के सिलसिले में किसी बड़े से बड़े इन्सान से मरऊब न होइये, मुतासिर (Impress) न होइये। फुलां आदमी यह कह रहा है तो कैसे ग़लत है। मेरा तजुरबा यह है कि जो आदमी जितना बड़ा होता है, उतनी ही बड़ी ग़लती करता है। बरट्रेन्ड रसल (Burtrand Russel) (बरट्रेन्ड रसल एक बहुत बड़ा फलसफी था) जो बेहतरीन लिखने वाला है, हमारे उलेमा को उससे लिखने का अन्दाज़ सीखना चाहिए है। हमारे यहां क़ाबिलियत का मेयार ये है कि आसान से आसान बात को इतना मुश्किल बना दो कि बात किसी के समझ में ही न आये। रसल का स्टाइल ये है कि पहाड़ को भी पानी बना कर पेश करो। लेकिन यही रसल जब खुदा के मौजू (Topic) पर आता तो इतनी भयानक और बचकाना ग़लती करता है कि हैरत होती है। जो इन्सान इतना बड़ा फ़लसफ़ी (Philosopher) हो, वह इतनी बचकाना बात कैसे कह रहा है? सुकरात कितना बड़ा फलसफी (Philosopher) था। उसकी मंजिलत देखिए, उसके दरजे को देखिए और उसकी भयानक ग़लती को देखिए। सुकरात को भी इस बात का यकीन था कि मर्द के दांत 32 होते है। और औरत के दांत 31 होते हैं। अगर 33 कहता तो शायद ज्यादा काबिले कबूल बात होती, तो रसूल ने कहा कि भाई, इसमें कौन सी बड़ी और कौन सी मुश्किल बात थी? अपनी बीवी से कहा होता कि ज़रा मुंह खोलो तो मैं दांत गिन लूँ। मालूम हो जाता कि 31 हैं या 32 दांत। मगर वह यकीन जो पहले से चला आ रहा था, उसमें ऐसा मुबतेला हुआ कि बीवी का मुंह खोल कर दांत गिनने की ज़हमत गवारा न की। जो सब कह रहे थे, वह उसने भी कहना शुरू कर दिया कि मर्द के 32 दांत होते हैं, औरत के 31 होते हैं। हमेशा मैरिट के ऊपर गुफतगू कीजिए। दूसरी बात ये कि मज़हब से लोग जो बेज़ार हो रहे हैं, तो ये मज़हब के बारे में ग़लत नज़रियात हैं, जो लोगों को मज़हब से बेज़ार कर रहे हैं।

तक़रीबन हर मुसलमान को यकीन है कि माद्दियत (Materialism) अलग है और रूहानियत (Spirituality) अलग है। दोनों में जंग है। जहां माद्दियत होगी वहां रूहानियत नहीं होगी। दूसरे लफ्ज़ों में जहां दीन होगा, वहां दुनिया नहीं होगी और जहां दुनिया होगी वहां दीन नहीं होगा। अगर यही सूरते हाल है तो वही सवाल सामने आता है कि अगर हम दीन (Religion) को लें तो दुनिया (world) को छोड़ना पड़ेगा या दुनिया को लें तो दीन को छोड़ना पड़ेगा। कहां है ये? माद्दियत (Materialism) और रूहानियत (Spirituality) में कोई जंग नहीं है। दीन और दुनिया में कोई जंग नहीं है। दुनिया और आखिरत में कोई जंग नहीं है। काश कि मैं आप को समझा ले जाऊं। दीन एक रास्ता है जो इन्सान के नफ्स से शुरू

होता है और सीधा ज़ाते इलाही तक जाता है। अब जो लोग नफ्स में सिमट कर रह जाते हैं वो माद्दा परस्त (Materialist) होते हैं। जो यहां (नफ्स) से उठते हैं तो जितना–जितना वो ऊपर उठते जाते हैं, अल्लाह का कुर्ब (नज़दीकी) हासिल करते चले जाते हैं। तो अब माद्दियत और रूहानियत की तारीफ़ (Definiton) क्या हुई? तारीफ ये हुई कि माद्दियत परस्त (Materilist) इन्सान को अपने नफ़्स के अलावा कुछ नहीं दिखाई देता और रूहानियत की मंज़िल ये है कि इन्सान जितना–जितना रूहानियत में बलन्द होता जायेगा वो खल्के खुदा को चाहने वाला बनता जायेगा। मैं मुआफी चाहता हूं मगर मैं यह बातें करने के लिए मजबूर हूं। मुझे मुस्तक़बिल (Future) को देखना है। मुश्किल ये है कि मुसलमानों ने मज़हबी रसूमात (Rituals) को मंजिल समझ कर मज़हबी रसूमात पर डेरे डाल दिये हैं। जबकि आप अगर दीन को देखें तो दीन की जितनी भी इस्तेलाहें (Terms) हैं वो सब राह और रास्तों के मानों में हैं। 'शरीयत' के माने क्या हैं? रास्ता। 'तरीकत' के माने क्या हैं? रास्ता। 'सिरात' के माने क्या हैं? वो भी रास्ता। तो जितनी इस्तेलाहें हैं वो खुद बता रही हैं कि ये 'रास्ता' हैं, 'मंज़िल' नहीं हैं। हमने ग़लती क्या की? नमाज़ है 'रास्ता' हमने उसको 'मंज़िल' समझ लिया। लोग नमाज़ें पढ़ते हैं लेकिन उनको ये नहीं मालूम कि नमाज़ रास्ता है, मंज़िल नहीं। तो 'रस्मों' (Rituals) को मंज़िल बना देने से दीन को ज़बरदस्त नुकसान हुआ है।

''इस्लाम' दीने रहमत, लेकिन मानने वाले दूसरों के लिए ज़हमत''

जो किसी बेगुनाह और बेखता इन्सान को मार दे वो मुसलमान नहीं है चाहे वो अपने को शिया कहता हो या अपने को सुन्नी कहता हो। बेगुनाह और बेखता इन्सान को आप नहीं मार सकते। किसी बेगुनाह मुश्रिक को आप नहीं मार सकते। किसी बेखता काफ़िर को आप नहीं मार सकते। इसलाम को समझये! इस्लाम तो यह कहता है कि आप दरख्त (पेड़) की एक पत्ती को भी तफ़रीह (Entertainment) के लिए नहीं तोड़ सकते। पेड़ की एक पत्ती को आप दवा (Medicin) बनाने के लिए तोड़े तो वो अलग बात है, खाने के लिए तोड़े तो अलग बात है लेकिन सिर्फ तफ़रीह (Fun) के लिए नहीं तोड़ सकते हैं। जो इस्लाम एक दरख्त की पत्ती को मसलने की इजाज़त नहीं देता तो वो किसी मां के दिल को मसलने की इजाज़त कैसे देगा? इस्लाम तो दीने रहमत है यह वही इस्लाम है जिस का कोई काम शुरू नहीं होता जब तक कि अल्लाह की रहमानियत (Mercifullness) और रहीमियत का इकरार न हो जाये। बिस्मिल्ला हिररहमानिर रहीम'। उसके बाद सूरये फातेहा शुरू हुआ। 'अल हम्दो लिल्लाहे रब्बिल आलमीन,अर रहमानिर रहीम'। इस्लाम को समझिए! हमारे रसूल (स) 'राहमतुल लिल आलेमीन' यानी तमाम आलमीन (Univers) के लिए रहमत (Blessing) हैं। कुरान 'रहमत लिल मोमिनीन' यानि मोमेनीन के लिए रहमत है। तो जिस मज़हब की हर चीज़ रहमत है, उसके मानने वाले सिवाये ज़हमत के और कुछ भी नहीं हैं। तो मेरे मुसलमान भाइयो, अगर तुम आपस में इसी तरह लड़ते रहे इल्मी मुबाहसे (Debate) की बात मैं नहीं कर रहा हूं। लड़ाइ और दंगे की बात कर रहा रहूं। ये जो मज़हब के नाम पर बेगुनाह इन्सानों का खून बहाया जा रहा है। इस्लाम तो आया है जान बचाने के लिए, तुम इस्लाम के नाम पर जानें ले रहे हो। अगर यहां (पाकिस्तान में) इसी तरह के हालात रहे तो आइन्दा आने वाली नस्लें (Generation) न शिया रहेंगी और न ही सुन्नी। वो इस्लाम ही को छोड़ चुकी होंगी।✦

✦आज 28 दिसम्बर 1997 के अखबार की खबर के मुताबिक अफ़गानिस्तान की ख़ाना जंगी की वजह से एक लाख मुसलमान ईसाई होकर मुल्क छोड़ कर चले गये ।

वो यही कहेंगे कि हम ऐसे इस्लाम को लेकर क्या करें जिसके मानने वालों को तरस नहीं आता है, रहम नहीं आता है। जब एक जवान मरता है तो आप को क्या खबर कि उसकी मां के दिल पर क्या गुज़रती है? उसके भाई के दिल पर क्या गुज़रती है? इसीलिए मेरी एक बार फिर गुज़ारिश है कि जब कोई शिया मारा जाये तो सुन्नी उलेमा उसके जनाज़े में शरीक हों और शरीक होकर बतायें कि मुजरिम CRIMINAL IS CRIMINAL! है चाहे वो वह शिया हो चाहे सुन्नी हो और जब कोई सुन्नी, किसी शिया के हाथों मारा जाये तो शिया उलेमा का फरीज़ा है कि वो उसके जनाज़े में शरीक हों।

''साइंस की दुनिया में ग़ैब पर इमान मगर मज़हब की दुनिया में ग़ैब पर इमान लाने को तैयार नहीं''

आज का इन्सान मज़हबी दुनिया में तो ग़ैब (Invisible, Unseen) पर ईमान लाने के लिए तैय्यार नहीं हैं लेकिन साइंस (Science) की दुनिया में ग़ैब पर ईमान लाने के लिए तैयार है। साइंस के मैदान में कितनी चीज़े मिलेंगी जो हमारे हवास से, हमारे SENES से मालूम नहीं होतीं। न मालूम होती हैं और न ही मालूम हो सकती हैं मगर साइंस की दुनिया में ग़ैब पर हमारा ईमान है। ये पूरी कायनात का निज़ाम (System) कशिश (Gravity) पर टिका हुआ है। अगर ये कशिश खत्म हो जाये तो पूरी कायनात COLLAPSE हो जाये। लेकिन ये कशिश किसी को भी दिखाई नहीं देती है। न दिखाई देती है, न सुनाई देती है, न सूंघी जा सकती है, न ही छुई जा सकती है और न ही चखी जा सकती है। लेकिन साइंस का इस बात पर ईमान है कि कशिश हम को दिखाई न दे रही हो मगर चांद (Moon) का ज़मीन (Earth)के गिर्द घूमना इस बात की दलील है कि कोइ चीज़ इसको पकड़े हुये है। आप एक तरफ मक़नातीस (Magnet) रख दीजिए। मैगनेट (चम्बुक) अगर ताकतवर (Powerfull) है तो वो लोहे को अपनी तरफ खींचना शरू कर देगा, मगर वो कशिश आप को दिखाई नहीं देगी। कोई डोर आप को दिखाई नहीं देगी, कोई तागा आप को दिखाई नहीं देगा। लेकिन लोहे का मक़नातीस (Magnet)की तरफ़ खिंचना दलील है कि मोअस्सिर न भी दिखाई दे रहा हो, असर तो दिखाई दे रहा है।

किसी स्टील के गिलास में अगर आपने तेज़ ठंडा पानी रख दिया तो थोडी देर के बाद आपने देखा कि गिलास के बाहर की तरफ पानी के क़तरे (Drops) जमना शुरू हो गये। गिलास के अन्दर के पानी में से एक कतरा पानी भी कम नहीं हो रहा है तो ये गिलास के बाहर पानी कहां से आ रहा है।

मालूम हुआ कि फ़िजा (Atmospher) में पानी रहता है और यही पानी सरदी पाकर, ठन्डक पाकर गिलास के चारों तरफ जम जाता है। ये पानी तो पूरी फिज़ा में मौजूद है। जहां आप बैठे हुये हैं यहां भी फैला हुआ है, जिसे आप नमी (Moisture) कहते हैं। ये नमी न आप को छूने से महसूस हो रही है, न चखने से महसूस हो रही है लेकिन जब आप ठन्डा पानी रखेंगे तो पानी के गिलास पर कतरों (Drops) का जमा होना इस बात की दलील है कि फिज़ा में पानी न होता तो गिलास के चारों तरफ पानी कहां से जमा रहता?

बात ये है कि अल्लाह ने जब कायनात को बनाया तो इरशाद फ़रमाया कि हमने जितनी भी चीजें बनाई है, उन सबको पैमानों (Measurement) के अन्दर बनाया है। इनमें ब्रेकटस (Brakets) लगे हैं। बच्चों को समझाना चाहता हूं! क्या आप हर आवाज़ सुन सकते है? हर आवाज़ नहीं सुन सकते हैं। वेव फ्रीकुएन्सी (Wave Frequency) का ब्रैकटस (Brakets)लगा हुआ है। इतनी

FREQUENCY के ऊपर जो आवाज़ होगी वो तो सुनाई देगी और उसके नीचे जो होगी वो नहीं सुनायी देगी।

देखने का मस्अला भी यही है। हर चीज़ हम को नहीं दिखायी देगी। रोश्नी (Light)की लहरों (Waves) में ब्रैकटस लगे हैं। बस, एक LIMIT है, एक BRACKET है। उस LIMIT के अन्दर अगर रोशनी की लहरें है तो दिखाई देंगी। इससे इधर गई नहीं दिखाई देंगी, इससे उधार गई नहीं दिखाई देंगी अब मैं UlTRA VIOLET RAYS या दूसरी RAYS की बात क्या करूं। जो RAYS आप को दिखायी देती हैं, उसकी बात करूं। वो रेज़ हैं एक्सरेज़। एक्रेज़ को आप देख नहीं सकते, फिर कैसे मालूम हुआ कि एक्सरेज हैं? एक्सरेज आप को नज़र नहीं आती हैं, फिर कैसे इल्म हुआ कि एक्सरेज़ हैं? एक्सरेज आप को दिखायी नहीं दे सकती हैं, मगर इनमें खासियत (Quality) यह है कि ये खुद तो दिखायी नहीं देतीं मगर छुपी हुई हक़ीकतों को दिखा दिया करती हैं। पेट के अन्दर क्या है? अगर कोई ज़ख्म है तो यह दिखा देंगी।

तो एक्सरेज़ का काम है कि जो नहीं दिखायी दे रहा है, वह भी दिखा देना। अब यह कितनी ज़्यादती की बात है कि साइंस की दुनिया में, फिज़िक्स (Physic) की दुनिया में तो आप का ग़ैब पर ईमान है लेकिन जब मज़हब की बात आती है तो आप कहते हैं कि जब तक हम खुदा को देखेंगे नहीं मानेंगे नहीं। तो भाई, अपने–अपने सोचने की बात है। आप कहते हैं कि हम खुदा को देखेंगे तो मानेंगे और मैं कहता हूं कि जिस दिन खुदा ने मेरे सामने आकर कहा कि मैं तुम्हारा खुदा हूं, उसी दिन मैं उसके वजूद से इन्कार कर दूंगा। इसलिए कि हमको वही चीज़ दिखायी देती है जो महदूद हो, जो ला महमूद हो वो नहीं दिखयी देती।

''साइंस इस्लाम की हक़्कानियत साबित करेगी''

कायनात की हर चीज़ ज़िन्दा है। 'सूरये जुमा' में इरशाद होता है कि ''कायनात में जितनी भी चीज़ें है, वो सब अल्लाह की तस्बीह अल्लाह की हम्दो सना कर रही है''। ये इन्सानों का ज़िक्र नहीं हो रहा है। इन्सानों का ज़िक्र होता, फरिश्तों का ज़िक्र होता, जिनों का ज़िक्र होता तो अरबी ग्रामर (Arbic Grammer) के हिसाब से 'मन' कहा जाता। 'मन' नहीं कहा जा रहा है 'मां' कहा जा रहा है। 'मन' आता है साहबाने अक़्ल के लिये और अरबी में 'मां' कहा जाता है चीज़ों के लिये। तो इरशाद होता है कि कायनात में जितनी भी चीज़े हैं, यह सब अल्लाह की तस्बीह कर रही हैं। कुरान में एक और जगह इरशाद होता है कि कायनात का कोई ज़र्रा (Particle) नहीं है जो वाकई हमारी हम्द और सना कर रहा हो लेकिन तुम को उनकी हम्द और सना सुनाई नहीं देती और सिर्फ इतना ही नहीं है, ये सब देख भी रहे है, सुन भी रहे हैं और रिकार्ड भी हो रहा है। इसी लिए इरशाद हो रहा है कि कयामत के दिन ज़मीन का एक–एक ज़र्रा बता रहा होगा कि क्या गुज़री ज़मीन के ऊपर? उस दिन अल्लाह हुक्म देगा कि बताओ और ज़मीन के ज़र्रे बतायेंगे। उन का बताना दलील है कि ये हिस (Sense) रखते थे। देख भी रहे थे और सुन भी रहे थे।

शायद इसी लिए 'नहजुल बलाग़ा' को पढ़िये कि मौला अली (अ०) अपनी आखों का देखा हुआ वाक्या ब्यान करते हैं कि काफिर ने रसूल (स०) से आकर कहा कि मैं तो आप को रसूल (स०) उस वक्त मानुंगा जब ये जो सामने दरख्त (पेड़) है, उसे आप बुलायें और ये आपके पास आ जाये। फ़रमाया कि क्या वाकई ईमान ले आओगे? कहा, हां। ईमान ले आऊँगा। तो मौला अली (अ०) फ़रमाते हैं कि रसूल (स०) ने इशारा किया

और वो दरख्त (पेड़) रसूल (स०) की तरफ चला और आप के सामने आकर खड़ा होगया। जब रसूल ने फरमाया कि अपनी जगह वापस जाओ तो वो वापस हो गया। तो अगर वो दरख्त (पेड़) सुन नहीं रहा था तो उसने रसूल (स०) की इताअत कैसे की? इसका मतलब ये है कि कायनात की हर चीज़ जिन्दन है। अब मुझे यह देखना है कि फिज़िक्स (Physic) क्या कहती है? कुछ हज़रात मजमें में ऐसे भी ज़रूर होंगे जो बेचारे मुरव्वत में कहते तो नहीं लेकिन अन्दर–अन्दर कुढ़ते ज़रूर होंगे कि ये मौलाना साहब कैसे हैं कि जब मिम्बर पर बैठते हैं तो साइंस और टेक्नालोजी (Science and Technology) की बाते ज़रूर करते हैं। ऐ भाई, मैं क्या करू? मैं मजबूर हूं बात करने के लिए क्योंकि मैं देख रहा हूं कि साइंस और टेक्नालॉजी दिन पर दिन इस्लाम की हक़्क़ानियत (Truth) को साबित करते चले जा रहे हैं। याद रखिए, इक्कीसवीं सदी में इस्लाम की हक़्क़ानियत को साबित करने के लिए मौलवी हज़रात बेबस हो जायेंगे, सिर्फ साइंस होगी जो इस्लाम की हक़ीकतों को साबित करेगी और वहीं से इस्लाम के ग़लब की तारीख शुरू होगी। न दुश्मन बनाइये साइंस को, न दरवाज़ा बन्द कीजिए टेक्नालॉजी का।

हज़रात, ये सारी कायनात मैटर (Matter)से बनी है, दुनिया की हर चीज़ मैटर (Matter) से बनी है जिसको उर्दू में माद्दा कहते हैं माद्दा और मैटर (Matter) बनता है ऐटम (Atom) से और ऐटम (Atom) का जब आप तजज़िया (Analysis) करे तो आप को नज़र आयेगा कि इनमें मनफी (Negative) और मुसबत (Positive) पारे काम कर रहे हैं। एक मरकज़ (Centre) के गिर्द इलेक्ट्रान (Electron) और प्रोटान (Proton) इतनी तेज़ी से गर्दिश (Rotate) कर रहे है कि जिसका तसव्वुर (Imagination) भी नहीं किया जा सकता है। मेरे अज़ीज़ो, जुमूद (Inactivity) मौत की अलामत है और हरकत (Movement) ज़िन्दगी की अलामत है। तो जब कायनात का सारा मैटर (Matter) बना है ऐटम (Atom) से और ऐटम का दिल धड़क रहा है, उसके ज़र्रात हरकत में हैं। ये खुद इस बात की दलील है कि कायनात की हर चीज़ में किसी न किसी उनवान से ज़िन्दगी पाई जाती है। इस लिये कि ये एनरजी (Energy) है, ये ताकत है और ताकत ही ज़िन्दगी होती है और ज़िन्दगी ताकत होती है।

शब्बीर का पैग़ाम

शाएरे अहलेबैत अल्लामा नज्म आफ़न्दी

ता अबद ज़िन्दा है तु और ता अबद इस्लाम है
ऐ शहीदे करबला इस्लाम तेरा नाम है
मरहबा ऐ सर फ़रोशाने हुसैनी मरहबा
यूं तलाशे मौत, जैसे मौत से कुछ काम है
मुस्तफ़ा की आल पर यूं बन्द पानी कर दिया
जैसे पानी बन्द कर देना रवाजे आम है
अब वो पहली सी नहीं असग़र को तकलीफ़े अतश
सो गये हैं बाप की गोदी में कुछ आराम है
कासिदे सुग़रा ज़रा लाशों में जाके देख ले
चाँद सी सूरत है जिनकी उनका अकबर नाम है
है गुलो ज़न्जीर में जकड़ा हुआ पैग़ाम्बर
ख़ून में डूबा हुआ शब्बीर का पैग़ाम है
कर चुके तस्ख़ीर कूफ़ा सोगवाराने हुसैन
अब असीराने बला का क़स्द सूए शाम है
आज भी आशूर के दिन की उदासी देख लो
कैसी बेरौनक सहर कैसी भयानक शाम है
कब हुजूरी में बुलाते हैं हुसैन इब्ने अली
देखता हूं नज्म कब तक गरदिशे अय्याम है